International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 05, May 2023
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

भारत में लोकतंत्र के सामने अवसर और बाधाएँ

Dr. PRAKASH CHAND MEENA

PROFESSOR IN POLITICAL SCIENCE

GOVT. COLLEGE RAJGARH (ALWAR)

सार

लोकतंत्र सरकार का एक रूप है जिसमें लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समय-समय पर आयोजित होने वाले स्वतंत्र चुनावों से युक्त प्रतिनिधित्व प्रणाली के माध्यम से निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं। भारत का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। लोकतंत्र में, सत्ता का आनंद जनता या उनके प्रतिनिधियों को मिलता है और शासन प्रणाली के हर क्षेत्र में जनता ही अंतिम प्राधिकारी होती है। हालाँकि, आधुनिक भारत में लोकतंत्र को सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ, गरीबी और बेरोजगारी, अशिक्षा, जातिवाद, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, जनसंख्या विस्फोट जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। भारत में सच्चे संसदीय लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए इस पर ध्यान देना आवश्यक है। यह पेपर भारत में मौजूदा लोकतांत्रिक व्यवस्था और दुनिया की लोकतांत्रिक व्यवस्था पर इसके निहितार्थ की जांच और विश्लेषण करने का प्रयास करता है। यह भारत के लिए एक स्वस्थ और टिकाऊ लोकतंत्र सुनिश्चित करने के लिए कुछ संभावित उपायों या संस्थागत सुधारों का भी सुझाव देता है।

कीवर्ड: लोकतंत्र, अशिक्षा, जातिवाद, भ्रष्टाचार

परिचय

लोकतंत्र राजनीतिक व्यवस्था की एक प्रणाली है जिसमें आम लोग और सरकार मिलकर एक नागरिक समाज का निर्माण करते हैं और एक साझा भविष्य का निर्माण करते हैं। हम लोकतंत्र के युग में रहते हैं और

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

दुनिया के अधिकांश लोग लोकतांत्रिक सरकार प्रणाली वाले देशों में रहते हैं। भारत सहित अधिकांश देशों ने शासन की लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया है। लोकतांत्रिक देशों में भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। लोकतंत्र की अवधारणा की उत्पत्ति प्राचीन ग्रीस में देखी जा सकती है। सरकार के एक रूप के रूप में, यह प्राचीन ग्रीस के शहर-राज्यों में मौजूद था। 'लोकतंत्र' शब्द दो ग्रीक शब्दों से लिया गया है - 'डेमोस' जिसका अर्थ है 'लोग' और 'क्रेटोस' जिसका अर्थ है 'शक्ति'। अतः लोकतंत्र का अर्थ है जनता की शक्ति। दूसरे शब्दों में, लोकतंत्र का अर्थ सरकार की एक प्रणाली है जिसमें शासन का अधिकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक प्रतिनिधि के माध्यम से लोगों के पास होता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा लोकतंत्र को "लोगों की सरकार, लोगों द्वारा और लोगों के लिए" के रूप में परिभाषित किया गया था। इस परिभाषा को लोकतंत्र की सबसे उपयुक्त परिभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। डेविड हेल्ड ने कहा कि "मेरा मानना है कि लोकतंत्र का सबसे रक्षात्मक और आकर्षक रूप वह है जिसमें नागरिक व्यापक क्षेत्र में निर्णय लेने में भाग ले सकते हैं।" जोसेफ ए शुम्पीटर द्वारा दी गई लोकतंत्र की एक और सबसे महत्वपूर्ण परिभाषा यह है कि "लोकतंत्र एक राजनीतिक पद्धति या राजनीतिक, विधायी और प्रशासनिक निर्णय लेने के लिए एक संस्थागत व्यवस्था है, जो कुछ व्यक्तियों को उनके निर्णय के परिणामस्वरूप सभी मामलों पर निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करती है।" लोगों के वोट का सफल प्रयास"। प्राचीन ग्रीस से आधुनिक विश्व तक परिवर्तन की अवधि के दौरान लोकतंत्र और इसके आयामों में परिवर्तन आया। परिणामस्वरूप, प्राचीन ग्रीस में प्रचलित लोकतंत्र के पैटर्न ने पूरी तरह से अलग और नया आकार ग्रहण कर लिया। इस संदर्भ में, प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि "लोकतंत्र सहिष्णुता है, यह सहिष्णुता है न केवल उन लोगों के प्रति जो सहमत हैं (हमारे साथ) बल्कि उनके साथ भी जो असहमत हैं" (नेहरू, 1950)। जो लोग लोकतंत्र में विश्वास नहीं करते हैं या लोकतंत्र में कोई विश्वास नहीं रखते हैं वे हिंसा और असहिष्णुता के रास्ते पर चलते हैं। बीसवीं सदी में एक आंदोलन देखा गया है राजनीति विज्ञान के प्रख्यात विद्वानों के नेतृत्व में, जो इस धारणा को खारिज करता है कि लोकतंत्र एक राजनीतिक अवधारणा है, सरकारी निर्णय लेने का एक तरीका है और लोकतंत्र को जीवन के एक तरीके के रूप में स्वीकार किया जाता है। हालांकि, इस संदर्भ में, जॉन डेवी ने बताया कि लोकतंत्र सरकार का एक रूप है, यह एक प्रकार की अर्थव्यवस्था है, यह समाज का एक क्रम है, और यह जीवन का

एक तरीका है। यह सिर्फ एक सामाजिक विश्वास है जिसमें शासनीय निर्णय प्राप्त किए जा सकते हैं और प्रत्येक नागरिक को जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति करने का अवसर मिलता है।

हालाँकि, अपने प्रारंभिक चरण से ही लोकतंत्र शब्द को एक राजनीतिक अवधारणा के रूप में स्वीकार कर लिया गया था, लेकिन आधुनिक दुनिया ने लोकतंत्र की दो और विशेषताएं मान ली हैं- आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र। राजनीतिक लोकतंत्र में, सरकार लोगों की सहमति पर आधारित होती है और सरकार की एक प्रणाली के रूप में होती है जिसमें देश के नागरिकों के पास सत्ता का हिस्सा होता है। जनमत में मतभेद, सरकार की आलोचना इस लोकतंत्र के कुछ तत्व हैं। सामाजिक लोकतंत्र में मनुष्य की गरिमा का सम्मान किया जाता है। लोकतंत्र समाज के प्रत्येक वर्ग को एक सामाजिक और मानवीय प्राणी के रूप में सम्मान देता है। इस शासन प्रणाली में लोकतंत्र एक गरिमामय मानव समुदाय को बनाए रखने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। आर्थिक लोकतंत्र का लक्ष्य अमीर और गरीब के बीच की खाई को कम करना, भूख से मुक्ति, सामाजिक सुरक्षा है। यह लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, जिसके बिना राजनीतिक और सामाजिक लोकतंत्र अर्थहीन होगा।

उद्देश्य

भारतीय लोकतांत्रिक शासन प्रणाली और विश्व लोकतांत्रिक प्रणाली पर इसके प्रभाव का अध्ययन करना

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामने आने वाले प्रमुख मुद्दों या चुनौतियों का अध्ययन करना

लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं भारत

परस्पर निर्भरता के बाद, भारत एक प्रस्तावना के साथ अपना संविधान पेश करके 26 जनवरी 1950 को लोकतांत्रिक गणराज्य बन गया। भारत में 'लोकतंत्र' शब्द का प्रयोग पहली बार किया गया संविधान की प्रस्तावना जो लोकप्रिय संप्रभुता की अवधारणा पर आधारित है। भारत के संविधान निर्माता एक प्रतिनिधि संसदीय लोकतंत्र प्रदान करते हैं जिसमें कार्यपालिका अपने कार्यों, नीतियों और अन्य कार्यों के लिए हमेशा विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है। भारत में लोकतंत्र तीन प्रकार के होते हैं - राजनीतिक लोकतंत्र, सामाजिक लोकतंत्र और आर्थिक लोकतंत्र। इस संदर्भ में, यह देखा गया है कि भारत के संविधान का लक्ष्य

सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्रदान करने के लिए एक समतावादी समाज की स्थापना करना है। आधुनिक समय में भी प्रचलित कुछ आधुनिक मूलभूत सिद्धांत भारतीय संविधान में दिए गए हैं - लोकतंत्र में, लोग संप्रभु शक्ति के स्रोत के रूप में होते हैं और सरकार लोगों की सहमति पर आधारित होती है। संविधान भारत के नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार प्रदान करता है और व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करना संविधान का सर्वोच्च कर्तव्य है। भारत में सामाजिक और शैक्षणिक रूप से हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए विशेष सुरक्षा का प्रावधान।कानून का शासन लोकतंत्र और इसके तहत स्थापित शासन प्रक्रिया का मूल सिद्धांत है। राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का प्रावधान जो भारत में सामाजिक और आर्थिक समानता सुनिश्चित करता है। आर्थिक लोकतंत्र लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। संवैधानिक चुनाव तंत्र के साथ पूरे देश में पारदर्शी और स्वतंत्र चुनाव। ये भारतीय गणतंत्र में लोकतांत्रिक शासन को बनाए रखने के लिए आवश्यक शर्तें हैं।

सामान्यतः प्राचीन ग्रीस में लोकतंत्र की प्रथा को 'नगर राज्य व्यवस्था' के नाम से जाना जाता था। इस प्रणाली में लोग शासन की अपनी शक्ति का प्रयोग करते थे। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि यह एक लोकतांत्रिक देश की संपूर्ण जनता द्वारा शासन की एक प्रणाली थी। प्राचीन ग्रीस में 'नगर राज्य' की व्यवस्था, लोकतंत्र देश के योग्य व्यक्तियों और नागरिकों द्वारा शासन और नियंत्रण है। दूसरे शब्दों में, लोकतंत्र या जनता का शासन नागरिकों द्वारा शासन के नियंत्रण में था। लोकतंत्र को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे - प्रत्यक्ष लोकतंत्र और अप्रत्यक्ष लोकतंत्र। प्राचीन ग्रीस में पहली बार प्रत्यक्ष लोकतंत्र प्रणाली का प्रचलन हुआ। प्रत्यक्ष लोकतंत्र की प्रणाली में, देश के लोग शासन के लिए आवश्यक कानून बनाने के लिए एकत्रित होते हैं और इन नियमों को लागू भी करते हैं। देश की न्यायिक प्रक्रिया में नागरिक भी सीधे तौर पर शामिल थे। लोकतंत्र के प्रावधान के अनुसार नागरिक स्वयं इन कर्तव्यों का पालन करते थे। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि नागरिकों के पास शासन की प्रक्रिया के साथ-साथ देश की निर्णय लेने की प्रक्रिया में सीधे भाग लेने की शक्ति है। स्विट्ज़रलैंड दुनिया में प्रत्यक्ष लोकतंत्र का सबसे अच्छा उदाहरण है। लोकतंत्र का दूसरा प्रकार अप्रत्यक्ष लोकतंत्र है। इस प्रकार के लोकतंत्र में नागरिक अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से देश की निर्णय लेने की प्रक्रिया। वर्तमान समाज में विश्व के अधिकांश देशों ने बड़े आकार और विशाल जनसंख्या के कारण अप्रत्यक्ष लोकतंत्र को ही सर्वोत्तम लोकतंत्र के रूप में स्वीकार किया है। चूंकि यह व्यवस्था प्रतिनिधियों द्वारा होती है इसलिए इसे प्रतिनिधि लोकतंत्र भी कहा जाता

है। भारत जैसा देश अप्रत्यक्ष लोकतंत्र का सबसे अच्छा उदाहरण है और दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र भी माना जाता है। भारत में, बड़ी आबादी और देश की विशालता के कारण, लोग भारत में केंद्र, राज्य और स्थानीय स्तर पर अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं।

भारत में लोकतंत्र के लिए चुनौतियाँ:

सरकार के एक रूप के रूप में लोकतंत्र को कई उभरती चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। लोकतंत्र के लिए कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं।

1. राजनीति का अपराधीकरण - राजनीति के अपराधीकरण की बढ़ती संख्या लोकतंत्र के कामकाज के लिए प्रमुख खतरों में से एक है। आम तौर पर, इसका मतलब चुनावों के माध्यम से राजनीतिक दलों और विधायिका में अपराधियों का सीधा प्रवेश और राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करने के लिए आपराधिक तरीकों और रणनीति का उपयोग करना है। यह लोकतंत्र को और अधिक अव्यवस्था और बाधित बनाता है क्योंकि यहां कानून तोड़ने वाले कानून निर्माता बन जाते हैं। इसलिए, समाज में कानून-व्यवस्था के साथ-साथ लोकतांत्रिक तंत्र के कामकाज में भी गिरावट की संभावना है। भारत में कई राजनीतिक दल राजनीतिक सत्ता हासिल करने या अपने स्वार्थ के लिए अपराधियों के गिरोह से जुड़े हुए हैं। राजनीति के अपराधीकरण के कारण समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है। बिहार में 1997 के चुनाव में, आपराधिक पृष्ठभूमि वाले 67 राजनेता चुने गए जो जनता पार्टी के सदस्य थे (सरमाह, एट अल 2004)। इससे आधुनिक भारत में भारतीय लोकतंत्र की कार्यप्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

2. जातिवाद - जातिवाद भारतीय लोकतंत्र के कामकाज के लिए एक और खतरा है। भारत में एक जाति-आधारित समाज है जो प्रकृति में अजीब है। भारत के लोकतंत्र ने जाति-आधारित राजनीति देखी है; जाति आधारित वोटिंग पैटर्न और जाति-आधारित युद्ध भी। भारत में, जाति व्यवस्था किसी व्यक्ति के जीने या बढ़ने के मौलिक अधिकारों को प्रभावित करती है जो लोकतंत्र का सार है। भारतीय समाज में, जाति व्यवस्था सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर लोकतंत्र को प्रभावित करती है।

3. निरक्षरता- यह लोकतंत्र के कामकाज के रास्ते में एक और बाधा है। उनमें सरकारी मशीनरी की कार्यप्रणाली के प्रति जागरूकता की कमी है जो लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। भारत जैसे देश में लोकतंत्र और अशिक्षा दोनों एक साथ नहीं चल सकते। ऐसा इसलिए क्योंकि लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था उसी

समाज में समृद्ध हो सकती है, जहां कानून का शासन हो, समानता का प्रावधान हो। लोकतंत्र के लिए सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता होती है, लेकिन अज्ञानी और निरक्षर लोग सही लोगों को अपना शासक नहीं चुन सकते। वे लोकतांत्रिक सरकार की मूल बातें भी नहीं समझ सकते। परिणामस्वरूप, एक अज्ञानी या अशिक्षित समाज की लोकतांत्रिक संस्थाओं की कमजोर संरचना स्वस्थ लोकतंत्र को गतिशील तरीके से बढ़ावा नहीं दे सकती है।

4. आतंकवाद- आतंकवाद लोकतंत्र के कामकाज के लिए एक और उभरती चुनौती है। यह लोकतांत्रिक सरकारों को कमज़ोर करता है और निर्दोष लोगों को मारता है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में, आतंकवाद सार्वजनिक बहसों को विकृत करता है, नरमपंथियों को बदनाम करता है, राजनीतिक चरमपंथियों को सशक्त बनाता है और समाजों का ध्रुवीकरण करता है। अब, यह बहुत बढ़िया है राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बाधा। सरकारें, अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं और नागरिक समाज जैसे कारक आतंकवादी हिंसा का सामना कर रहे हैं और न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में इसके सबसे खतरनाक राजनीतिक प्रभावों को कम कर रहे हैं। 9/11 के बाद अमेरिका ने घोषणा की कि आतंकवाद दुनिया का दुश्मन है। भारत कई वर्षों से जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी समस्या से जूझ रहा है। भारतीय संसद (2001) ताजहोटल (2008), पठानकोट (2016), और पुलवामा (2019) में आतंकवादी हमला कुछ ज्वलंत उदाहरण हैं जिन्होंने भारत में लोकतांत्रिक शासन को खतरे में डाल दिया।

5. भ्रष्टाचार- राजनीतिक भ्रष्टाचार लोकतंत्र के कामकाज में एक और बाधा है। यह सरकार की वैधता, लोकतांत्रिक मूल्यों और सुशासन को कमजोर करता है। राजनीतिक नेता देश की अवैध संपत्ति इकट्ठा करने के लिए राजनीतिक शक्ति का उपयोग करते हैं। भारत जैसे देश में भ्रष्टाचार का सीधा असर राजनीति, प्रशासन और संस्थाओं पर पड़ता है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में भ्रष्टाचार सार्वजनिक नीति निर्माण में विश्वास और जवाबदेही को कम करता है; यह न्यायपालिका में कानून के शासन और सार्वजनिक प्रशासन में सेवा के अक्षम प्रावधान से समझौता करता है। भ्रष्टाचार का सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है।

लोकतंत्र के लिए आवश्यक पूर्व शर्ते

सामान्य रूप से विश्व में और विशेष रूप से भारत में लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए, लोकतंत्र के सफल कामकाज के लिए निम्नलिखित कुछ आवश्यक पूर्व शर्तें आवश्यक हैं।

लोकतंत्र और राजनीतिक स्वतंत्रता:- लोकतंत्र के लिए आवश्यक पहली और सबसे महत्वपूर्ण पूर्व शर्त राजनीतिक स्वतंत्रता है। यह लोकतांत्रिक देश के प्रत्येक नागरिक को पूरी तरह और स्वतंत्र रूप से राजनीतिक प्राथमिकताएँ प्रदान करता है। यह लोगों का मौलिक अधिकार है कि वे उन्हें राजनीतिक रूप से संगठित करें, हालाँकि वे राजनीतिक प्राथमिकताओं का उपयोग कर सकते हैं। भारत जैसे देश में, लोगों को वोट देने का अधिकार, चुनाव लड़ने का अधिकार और आगे राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करने का अधिकार है। भारत में, राजनीतिक स्वतंत्रता नागरिकों को संघ बनाने और सरकार की आलोचना करने का अधिकार भी देती है।

लोकतंत्र एवं राजनीतिक चेतना:- सफल लोकतंत्र के लिए आवश्यक दूसरी महत्वपूर्ण पूर्व शर्त राजनीतिक चेतना है। आम तौर पर, राजनीतिक चेतना का अर्थ है राज्य और राजनीति के बारे में लोगों की जागरूकता। इसमें सरकारों, राजनीतिक संस्थानों, राज्य और राजनीति के प्रति स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, सहिष्णुता, स्पष्ट धारणा और आम सहमति शामिल है। हालाँकि, लोकतंत्र के सुचारू संचालन के लिए राजनीतिक चेतना आवश्यक है।

लोकतंत्र एवं राजनीतिक शिक्षा:- राजनीतिक शिक्षा लोकतंत्र के लिए आवश्यक एक और सफल घटक है। यह राजनीतिक चेतना को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक भी है। यह सबसे अच्छा मंच है जहां नागरिकों को लोकतंत्र के विचारों और मूल्यों को जानने का अधिकार है। राजनीतिक शिक्षा लोगों की सरकार के खिलाफ रचनात्मक आलोचना करने की क्षमता को बढ़ा सकती है ताकि उन्हें सरकार के निर्णय लेने में सही निर्णय पर पहुंचने में मदद मिल सके। यह शिक्षा प्रणाली का हिस्सा होना चाहिए. राजनीतिक शिक्षा से नागरिक या तो भविष्य के प्रभावी नेता बन सकते हैं या अनैतिक कारकों से प्रभावित हुए बिना बुद्धिमानी से अपना नेता चुन सकते हैं।

लोकतंत्र एवं आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा:- सफल कामकाज के लिए छठा महत्वपूर्ण तत्व लोकतंत्र आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा है। राजनीतिक अधिकारों का समुचित प्रयोग करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता अत्यंत आवश्यक है। यह गरीबी उन्मूलन में मदद करता है और उत्पादन प्रक्रिया में निष्पक्ष तरीके से भाग लेने के अवसरों की उपलब्धता के प्रति सुरक्षा प्रदान करता है। समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए, कुछ लोगों के बीच धन का संकेंद्रण और असमानता का उन्मूलन बहुत आवश्यक है।

लोकतंत्र और मजबूत पार्टी प्रणाली:- राजनीतिक दल लोकतंत्र के सफल कामकाज के लिए आवश्यक एक और घटक है। राजनीतिक दलों का एक महत्वपूर्ण कार्य जनमत को संगठित करना और नीतिगत निर्णयों के लिए अनुकूल स्थिति बनाना है। यह सरकार के गठन के साथ सरकारी कार्यों को प्रभावी ढंग से चलाता है। लोकतंत्र को और अधिक सफल बनाने के लिए सत्तारूढ़ सरकार पर नियंत्रण रखने के लिए एक स्वस्थ और प्रभावशाली विपक्षी दल आवश्यक है। इस प्रकार, भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक मजबूत और स्वस्थ पार्टी प्रणाली आवश्यक है।

लोकतंत्र और मीडिया की स्वतंत्रता:- लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए आवश्यक चौथी महत्वपूर्ण पूर्व शर्त मीडिया की स्वतंत्रता है। एडमंड बर्क के अनुसार मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। यह सरकार के कामकाज को जनता तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाता है। यह लोकतंत्र के प्रहरी के रूप में कार्य करता है। मीडिया जनता के बीच लोकतांत्रिक विचारों को भी बढ़ावा देता है और भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, आतंकवाद आदि की गतिविधियों को उजागर करता है। इसलिए, यह रेखांकित करना आवश्यक है कि जनता की राय बनाने और व्यक्त करने के लिए एक स्वतंत्र, स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया आवश्यक है।

लोकतंत्र एवं सत्ता का विकेंद्रीकरण:- लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए आवश्यक सातवीं पूर्व शर्त है सत्ता का विकेंद्रीकरण। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को चलाने के लिए सरकार की शक्ति का समाज के प्रत्येक वर्ग के बीच विकेंद्रीकरण होना चाहिए। सत्ता प्राथमिकताओं के विकेंद्रीकरण के लिए लोकतंत्र सबसे अच्छा मंच है। 73वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा स्थानीय स्वशासन की शुरूआत के साथ, लोग सीधे प्रशासन में रुचि लेते हैं और सरकार को पूर्ण समर्थन देते हैं। लोकतंत्र पंचायतीराज प्रणाली के माध्यम से शासन में लोगों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित करता है। जैसा कि डी टोकेविले ने ठीक ही कहा है कि, "स्थानीय संस्थाएँ स्वतंत्र राष्ट्र की ताकत बनती हैं। एक राष्ट्र स्वतंत्र सरकार की प्रणाली स्थापित कर सकता है लेकिन नगरपालिका संस्थानों के बिना, इसमें स्वतंत्रता की भावना हो सकती है। गांव के विकास से ही भारत का विकास हो सकता है। लोकतंत्र के सुचारू संचालन के लिए ग्राम पंचायत को अधिक स्वायत्त शक्तियों से सशक्त किया जाना चाहिए।

लोकतंत्र एवं स्वतंत्र एवं स्वतंत्र चुनाव:- लोकतंत्र के सफल संचालन के लिए आवश्यक सातवां घटक भारत में स्वतंत्र एवं स्वतंत्र चुनाव है। लोकतंत्र के सुचारु रूप से काम करने के लिए स्वतंत्र चुनाव मशीनरी

आवश्यक है जो संघ और राज्य विधानसभाओं दोनों के चुनाव आयोजित करती है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 324 एक स्वतंत्र चुनाव आयोग का प्रावधान करता है जिसे इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक रूप से तैयार किया गया है। स्वस्थ लोकतंत्र सुनिश्चित करने के लिए चुनावी सुधारों के साथ-साथ चुनावी कानून भी बनाए जाने चाहिए देश भर में। चूँकि यह सत्य है कि वोट देने का अधिकार लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है। इस प्रकार, स्वतंत्र, निष्पक्ष और समय-समय पर होने वाले चुनाव लोगों का विश्वास स्थापित करने में मदद करते हैं और यह लोगों की राय का सम्मान भी करते हैं।

उपसंहार

उपरोक्त चर्चा से, यह कहा जा सकता है कि यद्यपि भारत को दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रों में से एक माना जाता है, लेकिन व्यवहार में, कई उभरती चुनौतियाँ या मुद्दे हैं जो लोकतांत्रिक गणराज्य के सुचारू कामकाज में बाधाएँ पैदा करने के लिए जिम्मेदार हैं। भारत। हालाँकि, यह चर्चा का विषय है कि 1947 से आजादी के बहत्तर साल बीत जाने के बावजूद, भारत में अशिक्षा, भ्रष्टाचार, आतंकवादी और माओवादी गतिविधियाँ बहुत अधिक हैं, जिससे लोकतांत्रिक शासन की रीढ़ को खतरा है। आधुनिक विश्व में प्रत्येक लोकतंत्र को कई आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। लोगों के सहयोग से इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इसके अलावा, लोकतंत्र तभी फल-फूल सकता है जब लोगों और सरकार की सोच के बीच कोई बड़ा अंतर न हो और उनके बीच सहयोग की भावना हो। राजनेताओं के भ्रष्टाचार एवं स्वार्थ के कारण मतदाताओं की आस्था लोकतंत्र के प्रति कम हो गयी है। हालाँकि, हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के सदस्य हैं जो अपने नागरिकों को समान अधिकार और कर्तव्य सुनिश्चित करता है। इसलिए, राजनेताओं, सरकारों और लोगों का यह सर्वोच्च कर्तव्य है कि वे सामूहिक प्रयास करें और सरकार के कामकाज में सक्रिय रूप से भाग लें और अपने देश को परिपूर्ण बनाएं। सूचना का अधिकार अधिनियम को पूरे देश में ठीक से लागू किया जाना चाहिए और अधिनियम को भारत में लोकतांत्रिक सिद्धांतों के दुरुपयोग के खिलाफ निगरानीकर्ता के रूप में काम करना चाहिए। लोकतंत्र की चुनौतियों से राजनीतिक चेतना और लोगों को लोकतांत्रिक अधिकार, कर्तव्यों और मूल्यों के बारे में शिक्षित करके निपटा जा सकता है।

संदर्भ

बख्शी पी.एम. चुनिंदा टिप्पणियों के साथ भारत का संविधान, नई दिल्ली: यूनिवर्सल लॉ पब्लिशिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड। लिमिटेड, 1999.

बेटेइले आंद्रे। लोकतंत्र और उसके संस्थान, नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, 2012।

बीजू एमआर. (सं.), आधुनिक लोकतंत्र की गतिशीलता: भारतीय अनुभव, नई दिल्ली; कनिस्का पब्लिशर्स, 2009।

कोरी जे.ए. डेमोक्रेटिक सरकार के तत्व, न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, 1947।

फादिया बीएल. भारत सरकार और राजनीति, आगरा: सत्यभावन प्रकाशन, 2007।

6.गहलोत एन.एस. भारतीय राजनीति के लिए नई चुनौतियाँ, नई दिल्ली: डीप एंड डीप प्रकाशन, 2002

गोल्ड कैरिल सी. रीथिंकिंग डेमोक्रेसी: राजनीति, अर्थशास्त्र, समाज में स्वतंत्रता और सामाजिक सहयोग, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988।

गुआट्टा यूएन. इंडियन पार्लियामेंट्री डेमोक्रेसी, नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स, 2003।

जयल निरज गोपाल। (सं.), डेमोक्रेसी इन इंडिया, नई दिल्ली: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी, 2007।

कश्यप सुभाष. हमारी संसद, नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2008।

लैकॉफ सैनफोर्ड। लोकतंत्र: इतिहास, सिद्धांत, व्यवहार। बोल्डर, सीओ: वेस्ट व्यू प्रेस, 1996।

टूरिएन एलेन। डैमोक्रैसी क्या होती है? बोल्डर, सीओ: वेस्ट व्यू प्रेस, 1997।

कोरी जे. ए. एलिमेंट्स ऑफ़ डेमोक्रेटिक गवर्नमेंट, न्यूयॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी, 1947।

गहलोत एन.एस. भारतीय राजनीति के लिए नई चुनौतियाँ, नई दिल्ली: डीप एंड डीप प्रकाशन, 2002।

गोल्ड कैरिल सी. लोकतंत्र पर पुनर्विचार: राजनीति, अर्थशास्त्र में स्वतंत्रता और सामाजिक सहयोग,

सोसायटी, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988।

जयल निरज गोपाल। भारत में लोकतंत्र, नई दिल्ली: ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय, 2007।

कश्यप सुभाष. हमारी संसद, नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट, 2008।

टूरिएन एलेन। डैमोक्रैसी क्या होती है? बोल्डर, सीओ: वेस्ट व्यू प्रेस, 1997।